दूसरी नज़र

■ पी चिदंबरम

राष्ट्र-विरोधी अखबार!

रफाल विवाद खत्म नहीं होने वाला। अगर पुलवामा आतंकी हमले और इसके बाद वायुसेना की जवाबी कार्रवाई की वजह से यह दब गया था तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उकसाने वाली यह टिप्पणी कि 'अगर हमारे पास रफाल होता...' से फिर से यह छा गया है।

यह उनका दुर्भाग्य कि इस टिप्पणी के दो दिन के भीतर ही 'द हिंदू' ने रफाल सौदे पर एक और खोजी रिपोर्ट छाप दी। इस रिपोर्ट ने भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (कैग) के उन नतीजों की हवा निकाल दी, जिनमें कहा गया था कि एनडीए का रफाल सौदा यूपीए के रफाल के सौदे से 2.86 फीसद सस्ता था। (सरकार का दावा था कि उसने नौ से बीस फीसद सस्ता सौदा किया था, जिसे कैग की रिपोर्ट में खारिज कर दिया गया है।)

कौन-सा सौदा सस्ता?

मामला एकदम सीधा-सादा है। यूपीए के वक्त में किए गए सौदे में दासो के लिए बैंक गारंटी और परफॉरमेंस गारंटी देना अनिवार्य था। एनडीए के दौरान हुए सौदे में इन दोनों ही अनिवार्य शर्तों से कंपनी को छूट दे दी गई। गारंटी मुहैया कराने की कीमत बैंक अपने ग्राहक (इस सौदे में दासो) से वसूलेगा। यह गारंटी की 'लागत' है- ऐसा मामला है, जिसे सभी कारोबारी जानते हैं। रफाल सौदा चूंकि साठ हजार करोड़ रुपए का है, इसलिए गारंटी संबंधी शुल्क काफी ज्यादा होते।

अगर एक सौदा जिसमें गारंटी शुल्क काफी ज्यादा हों, और दूसरा सौदा जिसमें कोई गारंटी शुल्क न हो, तो यह सामान्य-सा ज्ञान है, जिससे हमें पता चल जाएगा कि जब दो कीमतों की तुलना की जा रही है, तो पहले सौदे में से गांरटी शुल्क हटा दिया जाना चाहिए। सीएजी ने दो हिस्सों में इन शुल्कों की गणना की-

बैंक गांरटी शुल्क- परफॉरमेंस गांरटी और	यूरो एएबी1 मिलियन
वारंटी शुल्क	यूरो एएबी2 मिलियन
कुल	यूरो एएबी3 मिलियन

कैग ने वर्णमाला अक्षरों और अंकों का उपयोग इसलिए किया है कि उसने सरकार से वादा किया था कि वह दाम संबंधी सूचना को 'ठीक तरह से' पेश करेगा। उसने खुल कर सरकार के पक्ष में काम किया। हालांकि कैग निम्नलिखित नतीजा निकालने के लिए मजबूर था-

'इसलिए, बैंक शुल्क नहीं देने से विक्रेता को जो कुल एएबी3 मिलियन यूरो की बचत हुई, वह मंत्रालय को हस्तांतरित कर दी जानी चाहिए। बैंक गारंटियों की जांच के हिसाब-किताब से मंत्रालय सहमत हो गया है, लेकिन दावा किया है कि यह मंत्रालय की बचत थी, क्योंकि बैंक गारंटी शुल्कों का भुगतान किया ही नहीं जाना था।'

हालांकि ऑडिट में कहा गया है कि यदि इसकी तुलना 2007 की पेशकश से की जाए तो वास्तव में यह बचत मैसर्स डीए के लिए थी।

कैग ने नहीं निभाई जिम्मेदारी

गारंटी शुल्कों को अभी तक जनता से छिपाया जा रहा है और दोनों सौदों की तार्किक तुलना अभी तक नहीं की जा सकी है। द हिंदू की रिपोर्ट में जो जानकारी दी गई है, वह भारतीय वार्ताकार दल (आइएनटी) की रिपोर्ट से खोज कर निकाली गई है। ये शुल्क सत्तावन करोड़ चालीस लाख यूरो के थे। अगर इस राशि को यूपीए के वक्त के सौदे से निकाल भी दिया जाए और दोनों सौदों की तुलना की जाए तो भी एनडीए का सौदा चौबीस करोड़ इकसठ लाख यूरो ज्यादा महंगा बैठता है। मौजूदा विनिमय दर अस्सी रुपए पर एनडीए का रफाल सौदा 1968 करोड़ रुपए महंगा है। इस तरह छत्तीस रफाल विमानों में हर विमान 54.66 करोड़ रुपए महंगा पड़ेगा।

यह रहस्य ही है कि क्यों प्रधानमंत्री कार्यालय ने आइएनटी को नजरअंदाज करते हुए समानांतर बातचीत शुरू कर दी। यह भी रहस्य ही है कि भ्रष्टाचार निरोधी उपबंध को क्यों खत्म कर दिया गया। यह रहस्य है कि भुगतान सुरक्षा प्रणाली- संप्रभु गारंटी, बैंक गारंटी और ऐस्क्रू अकाउंट को सौदे से एकदम अलग कर दिया गया। दासो से 'मुहब्बत और लगाव' में तो ऐसा नहीं किया गया होगा। तथ्य संकेत देते हैं कि जरूर इसके पीछे मकसद कुछ और था। कैग का कर्तव्य बनता था इन रहस्यपूर्ण पहलुओं की जांच करने और सच्चाई को सामने लाने का। लेकिन उसने अपना कर्तव्य नहीं निभाया।

द हिंदू एक-एक करके छिपाई गई सूचनाओं और तथ्यों का पर्दाफाश कर रहा है। और इस पर सरकार का जवाब क्या है? सरकार अखबार पर 'चुराए गए दस्तावेजों' का इस्तेमाल करने का आरोप लगा रही है और आपराधिक आरोप लगाने की धमकी दे रही है। सरकार ने ऐसी धमकियों के लिए ही अटार्नी जनरल को मैदान में उतारा है।

चोरी के मशहूर दस्तावेज

भारत सरकार ने 2012-14 के दौरान स्विस बैंक खाताधारकों के नाम हासिल कर लिए थे, जो कि हैक करके फ्रांस और जर्मनी को दे दिए गए थे। आयकर विभाग ने नोटिस जारी किए, आयकर की मांग निकाली और ऐसे मामलों की सुनवाई शुरू की। तब क्या आयकर विभाग चुराए गए दस्तावेजों के आधार पर कार्रवाई कर रहा था? इसी तरह 2016 में एक लॉ फर्म के कंप्यूटर से एक करोड़ पंद्रह लाख दस्तावेज लीक कर एक जर्मन अखबार- ज़िदडॉयचे ज़ायतुंग को दे दिए गए थे, जिसने ये दस्तावेज खोजी पत्रकारों के अंतरराष्ट्रीय कंसोर्टियम के साथ साझा किए थे। आयकर विभाग को खाताधारकों जो कि भारतीय या अप्रवासी भारतीय थे, के नाम जारी करने को लेकर कोई संदेह नहीं था और इन्हें नोटिस भेजे गए थे।

इसी तरह मशहूर पेंटागन पेपर भी दरअसल एक गोपनीय रिपोर्ट थी, जो वियतनाम युद्ध पर अमेरिकी रक्षा मंत्री ने तैयार कराई थी। 1971 में यह लीक हो गई थी। वाशिंगटन पोस्ट इसे छापने की तैयारी कर रहा था। अमेरिकी सरकार ने अखबारों पर मुकदमा कर दिया। अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया कि न्यूयार्क टाइम्स और वाशिंगटन पोस्ट को बिना किसी सेंसर या सजा के खतरे के ये दस्तावेज छापने की इजाजत दी जाए। न्यायमूर्ति ब्लैक, डगलस, ब्रेनेन जूनियर, स्टेवार्ट, वाइट और मार्शल ने अभिव्यक्ति की आजादी को राष्ट्रीय सुरक्षा की अस्पष्ट चिंताओं से ऊपर रखते हुए कहा था कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया को अक्षुण्ण रखने के लिए सूचना का प्रसार जरूरी है।

अब इस बार भारत में इतिहास अपने को दोहरा रहा है। मोदी और उनके मंत्री द हिंदू को राष्ट्र-विरोधी या इससे भी खतरनाक करार देंगे। इतना सब कुछ होने के बावजूद पाठक द हिंदू पढ़ते रहेंगे। रफाल विमान आएगा। खुली जांच होगी। सच सामने आएगा। देश में जीवन चलता रहेगा।

भीड़ हांकने का हुनर

एक अकेला कुत्ता सैकड़ों भेड़ों को कैसे हांक लेता है? 2014 में ब्रिटेन और स्वीडेन के वैज्ञानिकों ने इस रहस्य पर से पर्दा उठाने के लिए एक रोचक अध्ययन किया था।

वैसे तारीख की शुरुआत से ही श्वान और भेड़-बकरियां मानव जाति से जुड़े हुए हैं। कहा जाता है कि सबसे पहले कुत्ते ने आदमी से दोस्ती की थी और उसके जीवन में एक परिवार के सदस्य की भांति शमिल हो गया था। उसके बाद मनुष्य ने जब भेड़ और बकरियां पालनी शुरू की, तो पाया कि कुत्ता वफादार तो है ही, पर अच्छा चौकीदार भी है। वह अपने तरीके से चौकीदारी के साथ भेड़ों का संचालन भी बखूबी कर सकता है। भोटिया कुत्ते से लेकर बॉर्डर कुली और जर्मन शेफर्ड नस्ल के श्वान वास्तव में हांकने का काम इस तरतीब से कर लेते हैं कि सैकड़ों भेड़ों के झुंड को वे बिना चूक एक साथ रख लेते हैं और गंतव्य तक सुरक्षित पंहुचा देते हैं।

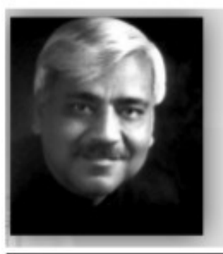

तीरंदाज

■ अश्विनी भटनागर

> ग्रीक दार्शनिक सुकरात का कहना था कि सार्वजनिक जीवन में सफल होने के लिए बहुत जरूरी है कि नायक उत्तेजित गतिविधि में लिप्त रहे और जनता को हांकने के लिए आक्रामक तेवर बनाए रहे। राजनीति परिभाषित रूप में झुंड बनाने की प्रक्रिया है और झुंड तभी बनेगा जब लोग भयभीत हों।

कार्य प्रभावी ढंग से जरूर होता आ रहा है, पर आज तक यह नहीं पता था कि भोटिया जैसे शीप डॉग किस तरकीब से झुंड को हांकते हैं और उसको कैसे बिखरने नहीं देते हैं। गड़ेरिए कई तरह से विशेष नस्ल के कुत्तों की प्रवृत्ति को समझाते रहे हैं, पर उनकी व्याख्या से वैज्ञानिक पूरी तरह संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने पहरी श्वान और उसकी निगहबानी में भेड़ों के झुंड का अध्ययन करने के लिए दोनों जानवरों पर जीपीएस सिस्टम लगाया और फिर उनके कार्यकलाप को रिकॉर्ड किया।

आखेट इन नस्लों की सहज वृत्ति है, जिसके लिए वे अपनी प्राकृतिक प्रवृत्ति के अनुसार शिकार को घेरते, डराते और दौड़ाते हैं। एक प्रशिक्षित भोटिया इन प्रवृत्तियों का इस्तेमाल भेड़ों के झुंड को काबू में रखने के लिए करता है। दूसरी तरफ, भेड़ों की प्रथम प्रवृत्ति स्वरक्षण की होती है। भेड़ों का झुंड जब भौंकने की आवाज सुनता है और कुत्ते को अपनी ओर आक्रामक रूप में आता देखता है, तो भेड़ें बचने के लिए झुंड के बीच में घुसने लगती हैं। प्रत्येक भेड़ भयभीत होकर अपने और शिकारी के बीच में किसी और भेड़ को डालने का प्रयास करती है। इसके चलते झुंड और घना होता जाता है। भोटिया कुत्ता भेड़ों की इस प्रवृत्ति से प्राकृतिक रूप से वाकिफ होता है और वह बार-बार भौंक कर, आक्रामक तेवर दिखा कर, उन्हें झुंड में इकट्ठा कर लेता है।

वैज्ञानिकों ने पाया कि शीप डॉग झुंड को संग्रहित करने और उसको अपनी मर्जी से चलाने के लिए दो तरीके इस्तेमाल करता है। पहले वह झुंड के पीछे से आता है और भौंक कर तथा इधर-उधर से घेर कर भेड़ों को जमा करता है। भेड़ें अपने रक्षण के लिए एक-दूसरे से सट जाती हैं और गहरे झुंड का निर्माण अनायास ही कर देती हैं।

भोटिया इस प्रक्रिया में लगातार इस बात पर निगाह लगाए रखता है कि सफेद बालों के बीच में कहीं कोई काला रिक्त स्थान तो नहीं है। जहां भी वह सफेदी के मध्य दूसरा रंग पाता है, वह उसको हटाने के लिए आक्रामक हो जाता है और भेड़ें अपने को बचाने के लिए झुंड के मध्य की तरफ चल देती हैं।

सैकड़ों अलग-अलग बिखरी भेड़ों को भीड़ में तब्दील करने के बाद, भोटिया उनको हांकना शुरू करता है। वह झुंड को जिस दिशा में हांकना चाहता है, उसकी विपरीत दिशा से भौंकना और दौड़ना शुरू कर देता है। एक तरफ से हो रहे आक्रमण से बचने के लिए भेड़ें दूसरी, और भोटिया द्वारा चाही, दिशा में मुड़ जाती हैं। इस तरह आशंकित कर के भोटिया भेड़ों को बड़ा झुंड बनाने के लिए मजबूर कर देता है और उनको बाड़े तक हांक ले जाता है।

वैज्ञानिकों ने जीपीएस से प्राप्त डाटा को जब जमा किया, तो पाया कि उससे वे एक वास्तविक गणितीय मॉडल बना सकते हैं। यह मॉडल वे सारे नियम बताता है, जोकि झुंड बनाने और उसको चलने के लिए कुत्ता और भेड़ प्राकृतिक रूप से उपयोग करते हैं।

वास्तव में स्वरक्षण वृत्ति का उपयोग करके हम किसी भी बिखरे हुए समुदाय को झुंड या भीड़ में तब्दील कर सकते हैं। भोटिया कुत्ता भौंक कर और दौड़ा कर भेड़ों को झुंड बनाने के लिए मजबूर करता है। दूसरे शब्दों में, शोर और उसके साथ भय उत्पन्न करने वाली उत्तेजित गतिविधि द्वारा नागरिक जीवन में भी भेड़चाल उत्पन्न की जा सकती है।

वैज्ञानिकों का दावा है कि श्वान-भेड़ की प्रवृत्ति पर बना मॉडल मनुष्य काज के लिए बेहद उपयोगी है, खासकर उन परिस्थितियों में जहां लोगों को किसी आपदा से बचाने के लिए झुंड में आनन-फानन तब्दील करना जरूरी हो, जैसे इमारत में लगी आग से बचने के लिए उन्हें जमा कर के निश्चित दिशा में ले जाने के लिए आदि। वे ऐसा रोबोट भी बनाने की फिराक में हैं, जो मनुष्यों का पशुचारण सुचारु रूप से कर सके।

ग्रीक दार्शनिक सुकरात ने शायद वैज्ञानिकों से पहले ही कुत्ता-भेड़ प्रवृत्ति को मनुष्य मानस में भांप लिया था। उनका कहना था कि सार्वजनिक जीवन में सफल होने के लिए यह बहुत जरूरी है कि नायक उत्तेजित गतिविधि में लिप्त रहे और जनता को हांकने के लिए आक्रामक तेवर बनाए रहे। राजनीति परिभाषित रूप में झुंड बनाने की प्रक्रिया है और झुंड तभी बनेगा जब लोग भयभीत हों। ओजस्वी भाषणों का इस भय को उत्पन्न करने और उसका पोषण करने में बड़ा महत्त्व है। सब शोर को ही सुनते हैं और उसी के अनुसार क्रिया करते हैं। जितना शोर होगा, उतना झुंड बनेगा और जैसे जैसे शोर बढ़ता जाएगा, झुंड भी बढ़ता जाएगा।

ग्रीक दार्शनिक का कहना था कि नागरिक असल में भेड़-बकरी होते हैं, जिनकी प्रवृत्ति जल्दी सहम जाने की होती है। मूलतः उन्हें हांके जाने से कोई परहेज नहीं होता है, क्योंकि उनमें विवेकशीलता लगभग नगण्य होती है। किसी प्रकार का भी खतरा, चाहे वे कितने भी काल्पनिक क्यों न हों, उन्हें झुंड बनाने और उसमें अधिक से अधिक धंसने के लिए मजबूर कर देता है। सफल नायक इसीलिए हमेशा खतरा दिखाता रखता है और भेड़ों को बाड़े में हांक देता है।

नफरत की सियासत

ऐसा लगने लगा है जैसे एअर स्ट्राइक के बाद हमारे विपक्ष के सारे नेता बौखला से गए हैं, इतना कि अपनी सुधबुध खो बैठे हैं। या फिर, जैसा नरेंद्र मोदी खुद कह रहे हैं, उनको मोदी से नफरत इतनी ज्यादा है कि देख नहीं पा रहे हैं कि इस नफरत की भावना को वे देश के लिए भी दिखाने लगे हैं। वरना क्या कारण है कि मोदी को नीचा दिखाने के मारे उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के गुण इतनी जोर-जोर से गाए हैं कि पाकिस्तान में कुछ लोगों ने मुहिम शुरू की है इमरान खान को नोबेल शांति पुरस्कार दिलवाने की। ऐसी बातें सुन कर इमरान खान खुद शर्मिंदा हुए और शर्माते हुए कहा कि वे अपने आप को इतने बड़े पुरस्कार के हकदार नहीं समझते हैं। 'यह पुरस्कार मिलना चाहिए उनको जो कश्मीर में शांति लाने का काम करते हैं।'

चर्चा शुरू हुई भी है अगर, तो सिर्फ इसलिए कि भारत में विपक्ष के आला राजनेताओं ने एक स्वर में कहा है एअर स्ट्राइक के बाद कि उनको विश्वास नहीं है कि बालाकोट में उस जिहादी मुख्यालय पर बम गिरे हैं, जहां वायुसेनाध्यक्ष कहते हैं कि हमारे लड़ाकू विमान गिरा कर आए थे। सबूत मांगे हैं अपने प्रधानमंत्री से बार-बार। और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की तारीफ करते नहीं थके हैं, जबसे उन्होंने हमारे पायलट विंग कमांडर अभिनंदन वर्तमान को सही सलामत वापस देश भेजा है।

मैंने जब ट्वीट करके पूछा कि ऐसा क्यों है कि हमारे विपक्ष के नेता पाकिस्तान के प्रधानमंत्री की बातों पर भरोसा करते हैं और हमारे प्रधानमंत्री पर नहीं, तो ट्रोल सेना पीछे पड़ गई मेरे, यह कहते हुए कि हमारे प्रधानमंत्री ने पिछले चार वर्षों में इतने झूठ बोले हैं कि उन पर विश्वास करना मुश्किल हो गया है। सो, विश्वास उस प्रधानमंत्री पर करना आसान है क्या, जो अभी तक मानने को तैयार नहीं है कि उसके देश की सरजमीं से जिहादी हमले हो रहे हैं भारत पर? पाकिस्तान के पूर्व सेनाध्यक्ष परवेज मुशर्रफ ने खुद स्वीकार किया है कि पाकिस्तानी सेना ने जैश-ए-मोहम्मद को पैदा किया था और इस संस्था की सारी गतिविधियां पाकिस्तान से होती हैं, लेकिन अब उनको रोक देना चाहिए, क्योंकि इस संस्था ने उनको ही जान से मारने की दो बार कोशिश की है।

और हमारे विपक्ष के नेता हैं, जो अब भी मोदी से सवाल करते फिर रहे हैं, न कि पाकिस्तान के नेताओं से। इतनी शंका जताई है इन्होंने पुलवामा और बालाकोट को लेकर कि मेरे एक पाकिस्तानी दोस्त ने मुझसे पिछले हफ्ते पूछा कि क्या यह बात सही है कि मोदी ने पुलवामा में आत्मघाती हमला खुद करवाया चुनाव जीतने के लिए। मैंने अपने इस दोस्त को खूब समझाने की कोशिश की कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहां ऐसी बात हुई होती, तो उसको छिपाना बहुत मुश्किल है। कोई भी प्रधानमंत्री अपने जवानों को इस घिनौने तरीके से नहीं मार सकता है।

मेरी बातें सुनने के बाद दोस्त ने कहा, 'भई, मैं आपके टीवी चैनल देखता हूं और मैंने देखा है कि आप ही के मीडिया के लोग और आपके सियासतदान शंका जाता रहे हैं। बल्कि इतने लोगों को आपकी वायुसेना की कार्रवाई पर शक होने लगा है कि विदेशी मीडिया में भी इमरान खान को अमनपरस्त बताया जा रहा है और मोदी को युद्धपरस्त।' यह सच है और काफी हद तक इसलिए कि भारत के ही पत्रकारों ने लंदन और न्यू यॉर्क के बड़े अखबारों में लिखा है मोदी के खिलाफ।

रही बात अपने विपक्ष के राजनेताओं की, तो उनको यह सुझाव देना जरूरी हो गया है कि अगर वास्तव में चुनाव जितवाना चाहते हैं अपने महागठबंधन को, तो शायद उनको मोदी को नीचा दिखाना बंद करना पड़ेगा। मोदी की छवि वैसे भी काफी अच्छी थी भारत के आम आदमी की नजरों में, लेकिन एअर स्ट्राइक के बाद और भी अच्छी हो गई है। वह इसलिए कि आम भारतीय तंग आ गया था बार-बार पाकिस्तान से मार खाकर। इतने जिहादी हमले किए गए हैं भारत में, जिसमें पाकिस्तान का हाथ साफ दिखा है, लेकिन आज तक हमारे किसी भी प्रधानमंत्री ने लौट कर वार करने की हिम्मत नहीं दिखाई है। सो, करोड़ों भारतीयों का दिल खुश हुआ था, जब हमारी वायुसेना ने एअर स्ट्राइक की थी सीमा पार।

इस स्ट्राइक के बाद पाकिस्तान से ज्यादा हमारे विपक्ष के नेता बौखलाए हुए दिखे। पहले तो राहुल गांधी ने वायुसेना की तारीफ की, लेकिन ऐसे की जैसे सारा श्रेय उन्हीं को देने की कोशिश कर रहे हों। क्या जानते नहीं हैं कांग्रेस अध्यक्ष कि लोकतांत्रिक देशों में ऐसे हमले तब होते हैं जब प्रधानमंत्री की इजाजत हो? क्या जानते नहीं हैं कि वायुसेना किसी भी हाल में बिना इजाजत के दुश्मन देश पर हमला नहीं कर सकती? बौखलाहट सिर्फ कांग्रेस अध्यक्ष में नहीं दिखी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और भी ज्यादा बौखलाई हुई दिखीं। अपने खास अंदाज में उन्होंने भाषण दिया पिछले हफ्ते, जिसमें कहा कि उनका पूरा समर्थन वायुसेना को है, लेकिन 'मोदी बाबू' को नहीं। इसका मतलब क्या हुआ? यही कि ममता दीदी भी समझी नहीं हैं कि मोदी की इजाजत के बिना वायुसेना का एक भी लड़ाकू विमान उड़ान नहीं भर सकता है?

जैसे जैसे चुनाव पास आ रहा है, वैसे वैसे दिखने लगा है कि इस महागठबंधन के पास एक ही चीज है और वह है मोदी से नफरत। यही ईंधन है, जिस पर यह महागठबंधन चल रहा है, यही गोंद हैं जिससे इसको जोड़ा गया है। सवाल यह है कि इसके आगे उनके पास अगर न नीतियां हैं न विचारधारा, तो इनको जिताएगा कौन? बहुत खोखला लगने लगा है यह महागठबंधन।

वक़्त की नब्ज़

■ तवलीन सिंह

> जैसे जैसे चुनाव पास आ रहा है, वैसे वैसे दिखने लगा है कि इस महागठबंधन के पास एक ही चीज है और वह है मोदी से नफरत। यही ईंधन है, जिस पर यह महागठबंधन चल रहा है, यही गोंद हैं जिससे इसको जोड़ा गया है।

शौर्यकथा और चौर्यकथा

कानून का डर अच्छा है... ये डर अच्छा है... आज राफेल की कमी महसूस होती है... सेना की आलोचना करने वाले देश को कमजोर कर रहे हैं...

पराक्रमी भारत के लिए भारत माता की जय! विजयी भारत के लिए भारत माता की जय! वीर जवानों के लिए भारत माता की जय!

सेना ने दो सौ पचास मारे!

सरकार ने कोई आंकड़ा नहीं दिया!

सेना टारगेट हिट किया करती है। मारे गयों की गिनती नहीं करती!

एक बड़ा भाजपा नेता : तीन सौ मारे!

एक और भाजपा नेता : चार सौ मारे!

एक कांग्रेस नेता : लाशें दिखाओ कि कितने मारे?

शौर्यगाथा में जोश होता है, लेकिन अधिक जोश में होश कहां? जोश-जोश में किसी ने ढाई सौ मारे, किसी ने तीन सौ मारे, किसी ने साढ़े तीन सौ मारे, तो एक ने पूरे चार सौ मारे! इस तरह कुल मिलाकर तेरह सौ तो मारे ही!

इसे कहते हैं 'एकोसद्विप्रा बहुधा वदंति' यानी सत्य 'एक' होता है, पंडितजन अलग-अलग तरीके से बांचते हैं। ये बांचने की बात है मित्रो! फिर 'जाकी रही भावना जैसी!'

लेकिन दुष्ट विपक्ष को चैन कहां? कहता है : सबूत दो! सबूत दो!

एक परम राष्ट्रप्रेमी चैनल गरजा : विपक्ष के नेता तो पाकिस्तान के मीडिया के 'पोस्टर बॉय' हैं! ज्यादातर चैनल गरजते रहे कि सेना की बात गलत और पाक की बात सही! पाकिस्तान के एजेंट हैं ऐसे लोग!

एक चैनल पर दुर्दमनीय सिद्धू बोलते दिखे : हवाई हमलों के जरिए पाकिस्तान के आतंकी मारे कि सिर्फ कुछ पेड़ उड़ाए?

एक देशभक्त बोला : खाते यहां की हैं, गाते पाक की हैं! धिक्कार है!

कई अंग्रेजी चैनलों ने मोटे-मोटे रोमन अक्षरों में लाइनें लगाईं :

'घुस के मारा'! 'घर में घुस के मारा'!

इतने में शिवसेना बोली कि पब्लिक प्रमाण मांग रही है, तो देते क्यों नहीं?

सर जी, ये शिवसेना दोस्त है कि दुश्मन? लगता है कि शिवसेना वाले अपनी 'सेना' का भी भरोसा नहीं करते? हर विपक्षी सबूत मांग रहा है। सिब्बल मांग रहे हैं। ममता मांग रही हैं। सबूत बड़ा है कि देश? कितने देशद्रोही लोग हैं ये?

दिग्विजय जी ने फिर ललकारा कि आतंकी हमला एक 'दुर्घटना' थी! इसके बाद कुछ चैनलों में ज्ञानीजनों के बीच 'घटना' 'दुर्घटना' और 'हमले' के बीच बड़े ही 'तत्त्वमीमांसापरक' विचार चले। लेकिन इस बीच 'दुर्घटना' शब्द एक भाजपा नेता को इतना पसंद आया कि उसने भी पुलवामा को 'दुर्घटना' कह दिया! हाय हाय! जोश में फिर होश खो दिए भाई जी ने! इसे देख दिग्विजय ने फौरन चिपकाया : अब क्या कहना है भाजपा का?

सबूत फिर भी मांगे जाते रहे! एक एंकर ने कहा कि अमेरिका ने लादेन को मारा तो वीडियो दिया। इजराइल ने फिलस्तीनों को मारा तो वीडियो दिखाया! आप भी वीडियो दिखा दें। सारी बहस खत्म!

यह क्या बात हुई? हम क्यों दें सबूत? हम ही हैं सबूत! जब आज तक नहीं दिए किसी बात के सबूत, तो अब क्यों दें सबूत? क्या देशद्रोहियों को दें सबूत? एक मंत्री जी ने तंज कसा : बालाकोट जाकर देखें सबूत! दूसरे मंत्री जी बोले : पाक जाकर देख आएं सबूत!

एक चैनल पर एक ज्ञानीजन रोने लगा कि जरा-सा कुछ पूछो तो पाकिस्तानी कह देते हैं! अरे भैये! यही तो है, देशभक्ति का धोबीपाट!

अंत में कुछ चैनल बालाकोट के सेटेलाइट फुटेज खोज ही लाए और बुधवार को दिन भर बजाते रहे कि एनटीआरओ ने बताया है कि बालाकोट के टारगेट में तीन सौ मोबाइल सक्रिय थे, यानी तीन सौ आतंकी सक्रिय थे। सेटेलाइट बताती है : ये हमले से पहले वाली बिल्डिंग है और ये हमले के बाद वाली है। बाद वाली बिल्डिंग की छत में छेद ही छेद दिखते हैं। ये हमारे बमों ने किए हैं। रायटर झूठ कहता है कि कुछ नहीं हुआ! अरे, जब हम 'घर में घुस कर मारते हैं' तो ऐसे ही मारते हैं।

लेकिन बुधवार की सुबह इस शौर्यगाथा पर अचानक गाज गिरी! खबर आई कि राफेल की फाइल चोरी हो गई है और जो पेपर 'रिव्यू पिटीशन' में दाखिल किए गए हैं, उन पर विचार नहीं होना चाहिए!

कई चैनलों पर हिंदू के एन. राम ने कहा कि हमने न कोई जासूसी की, न पेमेंट किया। राफेल दस्तावेज जनहित में छापे। संविधान की धारा उन्नीस और आरटीआई कानून सुरक्षा देते हैं... 'आफिशियल सीक्रेट्स एक्ट' कोलोनियल समय का, 1923 का है... मैं डरता नहीं!

ज्यादातर एंकर चकित-विस्मित कि इतनी संगीन चोरी की खबर पहले क्यों नहीं दी गई?

राहुल ने प्रेस कान्फ्रेंस कर तुरंत टीप जड़ी : ये गायब... वो गायब... अब राफेल की फाइल गायब! इसकी जांच होनी चाहिए!

जाने किस दुष्ट की नजर लगी कि एक सुंदर 'शौर्यकथा' की जगह अचानक एक 'चौर्यकथा' छा गई और कहानी फिर निगोड़े राफेल पर आ टिकी!

फिर भी, अपनी धरती वीरों से खाली नहीं हुई। कबीरनगर की मीटिंग में एक भाजपा सांसद और एक एमएलए ने आपस में ऐसी 'जूतालीला' की कि उसे देख लोग कुछ देर के लिए बालाकोट की वीरता भूल गए!

सीन देख एक चैनल ने यह लाइन जड़ी : 'मेरा बूट सबसे मजबूत'!

बाखबर

■ सुधीश पचौरी

> बुधवार की सुबह इस शौर्यगाथा पर अचानक गाज गिरी! खबर आई कि राफेल की फाइल चोरी हो गई है और जो पेपर 'रिव्यू पिटीशन' में दाखिल किए गए हैं, उन पर विचार नहीं होना चाहिए!

नई दिल्ली